आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023

दैनिक समाचार–पत्र

प्रेषण :- कार्यालय चेतक सर्कल पोस्ट ऑफिस ,उदयपुर
प्रेषण दिनांक:-प्रतिदिन

मन के जीते जीत सदा

• वर्ष - 9 • अंक-2400 • उदयपुर, मंगलवार 20 जुलाई, 2021 • प्रेषण दिनांक : प्रतिदिन • कुल पृष्ठ : 4 • मूल्य : 1 रुपया

समाचार–जगत्
सकारात्मक व जनहितार्थ खबरें

सेवा–जगत्
मन से सेवा, नारायण सेवा

एक वक्त के भोजन को भी मोहताज सारा परिवार, दुःखी रामदास को मिली मदद

मानवता को झकझोर देने वाली दर्द भरी दास्तां है गुप्तेश्वर के पास बिलिया गांव में रहने वाले रामदास वैष्णव की। रामदास वैष्णव कारीगर है, जो अन्य श्रमिकों की तरह रोज कमाते और खाते है! कोरोना में उनका काम बंद है। परिवार के 6 सदस्यों के सामने भूख को शान्त करना मुश्किल हो गया उन्होंने नारायण सेवा संस्थान से मदद की गुहार लगाई। संस्थान ने उनकी मदद करते हुए एक माह का राशन प्रदान किया। रामदास राशन पाकर संतुष्ट हुए ओर ईश्वर को धन्यवाद देते हुए उनकी आँखों से खुशी के आँसू छलक पड़े।

संस्थान अध्यक्ष प्रशांत अग्रवाल ने बताया कि ऐसे ही 12 अन्य गरीब मजदूर परिवारों को भी निदेशक वंदना अग्रवाल की टीम ने राहत पहुचायी।

201 रोजगारविहीन कामगारों को राशन

नारायण सेवा संस्थान द्वारा दो दिवसीय सेवा चर्चा एवं शिविर का आयोजन हुआ। जिसमें बड़ौदा–गुजरात से आए अतिथियों को संस्थान ने सेवा प्रकल्पों की जानकारी दी गई तथा उन्हें अपने क्षेत्र में नरसेवा–नारायण सेवा के संकल्प संचालित करने की प्रेरणा दी गई। संस्थान अध्यक्ष प्रशांत जी अग्रवाल ने बताया कि बड़ौदा के समाजसेवियों की उपस्थिति में कोरोना प्रोटोकॉल का पालन करते हुए उबेश्वर जी में रविवार को विशाल राशन वितरण शिविर का आयोजित किया गया।

संस्थान निदेशक वंदना जी अग्रवाल, पलक जी अग्रवाल की टीम ने ऊपली वियाल, नीचली वियाल, शंकर खेड़ा और बड़ंगा के निर्धन, आदिवासी और गरीब बेरोजगार कामगारों को 201 राशन किट, बिस्किट और कपड़े आदि वितरित किए। हर किट में एक माह की खाद्य सामग्री थी। गोपेश जी शर्मा, दल्लाराम जी पटेल, बृजपाल सिंह जी और दिलीप सिंह जी सेवार्थी के रूप में मौजूद रहे।

संस्थान द्वारा रतलाम (म.प्र.) में राशन वितरण

नारायण सेवा संस्थान के मुख्यालय तथा देशभर की विभिन्न शाखाओं द्वारा कोरोना काल से प्रभावित जरुरतमंदों को निःशुल्क राशन वितरण किया जा रहा है। इस योजना के अंतर्गत करीब 50,000 परिवारों तक पहुंचा गया हैं। ऐसा ही एक आयोजन 10 जुलाई को रतलाम में हुआ।

कुल 26 परिवारों का चयन हुआ जिसमें से 24 को राशन प्रदान किया गया। राशन किट में समस्त प्रकार की खाद्य सामग्री समाहित होती है।

इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि श्रीमान् कांतिलाल जी छाजेड़, अध्यक्ष श्रीमान् ठाकुर मंगलसिंह जी, विशिष्ट अतिथि श्रीमान् गौरीशंकर जी शर्मा, श्रीमान् श्याम बिहारी जी भारद्वाज, श्रीमान् वीरेन्द्र जी शक्तावत, श्रीमान् बलराम जी त्रिवेदी, श्रीमान् राजू जी अग्रवाल, श्रीमान् मोहनलाल जी, श्री मान् निरंजन जी कुमावत व पुजारी जी पं. कन्हैयालाल जी उपस्थित थे। शिविर टीम ने श्री मुकेश जी शर्मा के नेतृत्व में सेवाएं दीं।

मुश्किलों से राहत मिली प्रमोद को

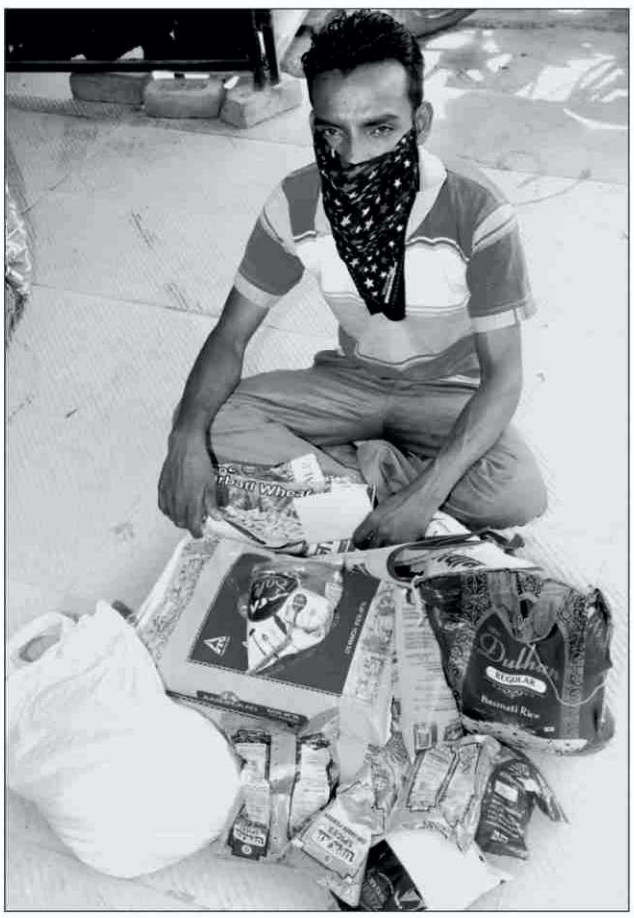

उदयपुर शहर के निकट बलीचा बस्ती में रहने वाले प्रमोद यादव (30) का कोरोना के चलते लॉकडाउन में ऑटो ही बंद नहीं हुआ गृहस्थी की गाड़ी भी थम गई। पति–पत्नी और तीन छोटी बच्चियों के परिवार के सामने घोर अंधेरा छा गया।

ऑटों के पहिये चलते थे तो घर भी चलता था। सब लोग घरों में थे। दुकानें, फैक्ट्रियां, निर्माण कार्य, पर्यटन स्थल, रेलें, बसें सब स्थगित थी। घर में निराशा का गहरा सन्नाटा पसरा था। जिसे नारायण सेवा संस्थान के सेवादूतों ने दरवाजे पर दस्तक देकर अप्रेल के शुरू में ही हटा दिया। वे अपने साथ भोजन के पैकेट व राशन लेकर आए थे। उन्हें देख परिवार ने भगवान को धन्यवाद दिया।

प्रमोद बोला– सचमुच आप नारायण के दूत समान ही है। हमारी मुश्किल को आपने हल कर दिया। मकान का किराया तो मैं आज नहीं तो कल हालात सम्भलने पर मजदूरी कर चुका दूंगा लेकिन आपने तो मेरे और परिवार के जिंदा रहने का सबब ही दे दिया। आप धन्य हैं। इस परिवार को अप्रैल से नियमित राशन दिया जा रहा है।

नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर

कोरोना संक्रमितों के सेवार्थ नि:शुल्क सेवाएं

ऑक्सीजन सिलेंडर सेवा

अब तक नि:शुल्क 482 ऑक्सीजन सिलेण्डर दिये

'घर – घर भोजन' सेवा

अब तक घर-घर नि:शुल्क 21,3051 भोजन पैकेट वितरित

कोविड पॉजिटिव बीमारों को कोरोना किट सेवा

अब तक नि:शुल्क 1891 कोरोना किट संक्रमितों को दिये

बीमार को एम्बुलेंस सेवा

बीमार को हॉस्पीटल पहुँचाते संस्थान कर्मी अब तक 482 जन लाभान्वित

हैड्रोलिक बेड सेवा

482 जन को हैड्रोलिक बेड कराये उपलब्ध

कोरोना प्रभावित 29,603 मजदूर परिवारों को राशन वितरण

अपनी जुबानी

संस्थान की कोरोना सेवाओं से लाभान्वितों के अनुभव

मैं और मेरे परिवार के अन्य सदस्य माता–पिता, पत्नी और दोनों बहनें कोरोना पॉजिटिव हो गए। हमनें डॉक्टर्स की सलाह पर होम आइसोलेट रहने का फैसला लिया। लेकिन हम सभी संक्रमितों के सामने दोनों समय के भोजन की समस्या थी। हमारा खाना कौन बनाएं? तभी हमें नारायण सेवा के घर–घर भोजन सेवा की जानकारी मिली।

संस्थान की हेल्पलाइन नम्बर पर कॉल किया। हमें 6 पैकेट भोजन भेजना शुरू कर दिया। वास्तव में खाना– बहुत स्वादिष्ट था। अच्छे से पैकिंग में सुरक्षित पैकेट 15 दिन तक निरन्तर मिलता रहा स्वादिष्ट भोजन। अब हमारा पूरा परिवार पूर्ण स्वस्थ हो गया। इस सेवा के लिए संस्थान का बहुत आभार।

– अंकित माथुर, उदयपुर

मैं और मेरी पत्नी व बेटे को बुखार आने लगा। कोरोना टेस्ट करवाया। हमारी रिपोर्ट कोरोना पॉजिटिव आ गई। तभी हम सब घर में आइसोलेट हो गए। हम तीनों बीमार दवाई और भोजन के लिए चिन्तित थे। तभी मेरे मित्र ने मुझे नारायण सेवा संस्थान की कोरोना किट और घर–घर भोजन सेवा से अवगत कराया। मैंनें दूरभाष से सम्पर्क किया। हमें कोरोना दवाई किट और भोजन पैकेट सुविधा शुरू हो गई। 14 दिनों तक संस्थान से कार्यकर्त्ताओं की सेवाएं मिली। सुपाच्य और रूचिकर भोजन के साथ कोरोना मेडीसन खाकर कोरोना संक्रमण से उबर गए। हम सभी अब पूर्ण स्वस्थ्य हैं। संस्थान का दिल से धन्यवाद।

– रानू राजपूत, उदयपुर

सम्पादकीय

मानव के लिये जितने सद्गुणों की परिकल्पना की गई है, उसमें परोपकार भी एक प्रमुख गुण है। उपकार मूल शब्द है। यह स्व के लिए भी प्रयुक्त होता है व पर के लिए भी। स्व पर किया गया उपकार, उपकार की श्रेणी में नहीं आता है, यह बस अपने प्रति मोह है। सही उपकार तो परोपकार ही है। दूसरों का उपकार सोचेंगे तो अपना भी उपकार हो जायेगा। मन विराट भावों से भर पायेगा। इसके विपरीत यदि स्व के उपकार की सोचेंगे तो क्षुद्र भावों का संचरण होगा और हम सब स्वार्थकेन्द्रित हो जायेंगे। परमात्मा ने मनुष्य की रचना ही परमार्थ के लिये की है। स्वार्थ तो हरेक जीव का स्वाभाविक कर्म है। जो अविकसित या पूर्ण विकसित पशु हैं वे सभी स्वार्थ में ही जीते हैं। परार्थ का वरदान केवल मनुष्य को ही है, तो परोपकार उसका आवश्यक गुणधर्म होना ही चाहिये। परोपकार का अर्थ यह नहीं है कि खुद की चिंता त्याग दें। पर हमारे कारण न किसी की हानि हो, न कोई दुःखी हो तथा न कोई आहत हो। परोपकार स्थूल हो या सूक्ष्म भाव का वह हर हाल में श्रेष्ठ है।

कुछ काव्यमय

परोपकारी जी रहे,
जितने भी जन आज।
देख देखकर लग रहा,
ईश्वर का अंदाज।।
परोपकारी पुण्य से
सहज मिलेगा मोक्ष।
यह तो सीधा दीखता,
बाकी सभी परोक्ष।।
वे ही मानव देव हैं,
जो करते उपकार।
इस धरती पर कर रहे,
देवलोक साकार।।
परोपकार कठिन नहीं,
हो मन में यदि भाव।
दीनदुखी को देखकर,
होता सहज लगाव।।
परोपकारी गुण दिया,
प्रभु ने सोच-विचार।
खुद तो तरना ही रहे,
तारेगा संसार।।

- वरदीचन्द राव

कोविड-19 के नियम

- भीड़-भाड़ वाली जगहों पर जाने से बचें।
- सार्वजनिक स्थानों पर ना थूकें।
- बार-बार अपने हाथों को धोएं।
- बाहर जाते समय मास्क जरुर लगाऐ।
- अपनी आंख, नाक या मुंह को न छुएं।
- जुकाम और खांसी होने पर मास्क पहनें।
- छींकते समय नाक और मुंह को ढकें।

अपनों से अपनी बात

देने में बड़ा आनंद

एक बार एक शिक्षक, अपने एक युवा शिष्य के साथ टहलने निकले। उन्होंने देखा कि रास्ते में पुराने एक जोड़ी जूते उतरे पड़े है, जो पास के खेत में काम कर रहे मजदूर के थे वह काम खत्म कर घर जाने की तैयारी में था। शिष्य को मजाक सूझा, उसने शिक्षक से कहा, ''गुरुजी क्यों न हम ये जूते कहीं छिपा दें।

मजदूर इन्हें यहां नहीं पाकर घबराएगा तो बड़ा मजा आएगा। ''शिक्षक गम्भीरता से बोला ''किसी गरीब के साथ इस तरह का मजाक ठीक नहीं है। क्यों ना हम इन जूतों में कुछ सिक्के डाल दें और छिपकर देखें कि इसका मजदूर पर क्या प्रभाव

पड़ता है।

शिष्य ने ऐसा ही किया और दोनों पास ही झाड़ियों में छिप गए। मजदूर आ गया। उसने जैसे ही एक पैर जूते में डाला, उसे किसी चीज का आभास हुआ। उसने जूते में देखा कि कुछ सिक्के पड़े थे। उसे बड़ा आश्चर्य हुआ। उसने इधर-इधर देखा। अब उसने दूसरा जूता उठाया, उसमें भी सिक्के थे। उसकी आंखों में आंसू आ गए उसने हाथ जोड़कर कहा, हे भगवान्! समय पर प्राप्त इस सहायता के लिए उस अनजान सहायक का लाख-लाख धन्यवाद। उसकी सहायता के कारण आज मेरी बीमार पत्नी को दवा और भूखे बच्चों को रोटी मिल सकेगी।

मजदूर की बातें सुन शिष्य की आंखे भर आई। शिक्षक ने शिष्य से कहा 'क्या तुम्हारी मजाक वाली बात की अपेक्षा जूते में सिक्का डालने से तुम्हें कम खुशी मिली? ''शिष्य बोला, आपने आज मुझे जो पाठ पढ़ाया है, उसे मैं जीवन भर नहीं भूलूंगा।

-कैलाश 'मानव'

अमूल्य है प्रशंसा

हमारे भीतर अगर धन्यवाद का भाव आ जाए तो जीवन सुखमय हो जाएगा। हर अच्छाई की प्रशंसा करके लोगों के दिलों को जीता जा सकता है। एक परिवार में पति- पत्नी और बच्चा बडे प्यार से रहते थे। पति और पत्नी दोनों जॉब करते थे। गृहस्थी आराम से चल रही थी। एक दिन की बात है कि पत्नी थकी-मांदी ऑफिस से लौटी, उसने जैसे-तैसे भोजन बनाया और रख दिया। देर शाम पति घर लौटा। उसने उस भोजन को प्रेम से खा लिया, परन्तु उसके बेटे को भोजन नहीं भाया।

बेटे ने रात को सोते समय पिता से पूछा पापा ! आज भोजन कच्चा था, फिर भी आपने खा लिया। मम्मी को कुछ नहीं बोला तब पिता ने प्यार से बेटे के सिर पर हाथ फिराते हुए कहा-

आपकी मम्मी रोजाना अच्छा भोजन बनाती है, आज उनकी तबीयत ठीक नहीं थी। इसीलिए अच्छा भोजन नहीं बना पाई, कोई बात मैंने कुछ नहीं कहकर घर में अशांति को रोक लिया। बेटा पिता से एक अच्छी बात सीख गया। लेकिन दूसरी कहानी में एक पत्नी ने पति की थाली में घास-फूंस, कंकर -पत्थर ढककर परोस दिया। पति ने भोजन के लिए ऊपर की थाली हटाई तो घासं-फूंस देखकर आग-बबुला हो गया और जोर-जोर से कहने लगा कि मुझे तुमने जानवर समझा है क्या? पत्नी पलटकर जवाब देती है-पतिदेव ! आज शादी को 5 वर्ष हो गए मैंने अच्छे-अच्छे व्यंजन बनाकर आपको परोसे, परन्तु आपने कभी भी अच्छा या बुरा, कुछ भी नहीं कहा। मुझे लगा कि आप जानवर ही है जो अच्छे को अच्छा कहना नहीं जानते। यह सुनकर पति ने सीख ली कि मुझे उसकी अच्छाई भी बताना चाहिए थी, ताकि वह हमेशा खुश रहती ।

- सेवक प्रशान्त भैया

एक सेवाभावी मानव की जीवनी

(वरिष्ठ पत्रकार श्री सुरेश जी गोयल द्वारा लिखित-झीनी-झीनी रोशनी से)

कैलाश का यह साथी अक्सर उसके साथ अस्पताल जाने लगा। धीरे धीरे उसमें इतना परिवर्तन आया कि वह कैलाश के बिना भी अकेले ही अस्पताल जाने लगा। किसी रोगी को खिचड़ी चाहिये होती तो वह अपने घर से खिचड़ी बनवा कर लाता और उसे खिलाता। एक रोगी को कम्बल लाकर भी ओढ़ाया। जिसे सभी लोग मक्खीचूस कहकर चिढ़ाते थे उसमें ऐसा परिवर्तन देखा तो सबको आश्चर्य हुआ। इसका परिणाम यह निकला की धीरे धीरे अन्य लोग भी इस सेवा कार्य में रूचि लेने लगे।

कैलाश को यह सब देख खुशी होती थी। अब उसने अपने झोले में गीता प्रेस गोरखपुर की कुछ पुस्तकें भी रखनी शुरू कर दीं। पतली-पतली शिक्षाप्रद पुस्तकें बहुत कम कीमत में आती थी। कैलाश 10-12 एक साथ खरीद कर झोले में रखने लगा। ये पुस्तकें मरीजों को पढ़ने के लिये देता और वो पढ़ लेते तो वापस ले कर किसी अन्य को दे देता।

एक बार किसी वृद्ध को उसने पुस्तक दी तो उसने अपनी लाचारी बताते हुए कहा कि वो तो अंगूठा छाप है, उसे पढ़ना नहीं आता। कैलाश ने अपने झोले से एक दूसरी पुस्तक निकाली और वृद्ध को दी। इस पूरी पुस्तक में सीता राम, सीता राम लिखा हुआ था। कैलाश ने इसके साथ ही एक पेन्सिल भी दी और उसे समझाया कि पूरी पुस्तक में सीता-राम लिखा हुआ है, हर शब्द पर यह पेन्सिल रख कर आप सीता राम बोलते जाना, इस तरह आप पूरी पुस्तक पढ लोगे।

अंश - 65

चेगलपट्टु (तमिलनाडु) में राशन-सेवा

नारायण सेवा संस्थान यों तो दिव्यांगता मुक्ति अभियान में प्रमुख रूप से सेवारत है किंतु कोरोना काल में जरूरतमंदों के लिये विविध प्रकार की सेवा में अग्रणी रहा है। आप सभी के आशीर्वाद से देशभर के करीब 50 हजार परिवारों को राशन-सामग्री प्रदान करने का सौभाग्य पाया है।

यह प्रक्रिया अनवरत जारी है। ऐसा ही एक राशन वितरण शिविर नारायण गरीब परिवार राशन-योजना के अंतर्गत तमिलनाडु प्रांत के चेगलपट्टु नगर में 30 जून 2021 को आयोजित किया गया।

नारायण सेवा संस्थान की इस शाखा द्वारा कुल 104 परिवारों को राशन-किट प्रदान किये गयें।

शिविर प्रभारी लालसिंह जी भाटी के अनुसार इस कार्यक्रम में जो अतिथिगण पधारे उनके शुभनाम निम्नलिखित हैं- श्री शिवकुमार जी (बी.डी.ओ., मदुरंतकम ब्लोक), श्री मुरली जी (सब इंस्पेक्टर पुलिस पडालम), श्री जी. एस. सुरेश बाबू (शासकीय वकील), श्री मारी मूथा (सेवानिवृत वी. ए. ओ.) श्री सत्य सांई, श्री एजीलरासु (सामाजिक कार्यकर्ता), श्री एम. जी. अंबाजगन (निदेशक-जी. वी. एस.) श्री वेंकटेश जी एस. (कोषाध्यक्ष-जी. वी. एस.)। शिविर के लाभार्थी जन अत्यंत प्रसन्न थे।

विटामिन और कैल्शियम से दूर होगा गर्दन का दर्द

गर्दन में होने वाले दर्द को आमतौर पर लोग नजरअंदाज करते हैं लेकिन कई बार वह दर्द गंभीर होने पर पूरे जीवनशैली को प्रभावित कर देता है। पिछले कई सालों से सवाईकल स्पॉडिंलाइसिस के रोगियों की सख्या में लगातार वृद्धि हो रही है।

डॉ. आरपी जायसवाल बताते हैं कि गर्दन की तकलीफ को फौरन मेडिसन और फिजियोथेरेपी की मदद से दूर कराने की कोशिश करनी चाहिए। लेटलतीफी से परेशानी बढ़ सकती है। इसक अलावा खाने में कैल्शियम और विटामिन डी की मात्रा अधिक लेनी चाहिए।

इन बातों का रखें ख्याल तो कम होगी परेशानी

- पूरी नींद नहीं लेना, ऊंचे तकिया पर सोना, लेटकर पढ़ना, टीवी देखना और घंटों कंप्यूटर पर काम करने से बढ़ता है स्पॉडिंलाइसिस।
- लंबे समय से निरतंर गाड़ियों का परिचालन करते रहने से गर्दन की समस्या बढ़ रही है।
- गलत ढंग से शारीरिक श्रम करना, अधिक बोझ उठाने से भी परेशानी आती है।
- दुर्घटना के दौरान गंभीर चोट या हड्डियों में खराबी आने से स्पांडिलाइसिस की बीमारी बढ़ती है।
- खाने में कैल्शियम और विटामिन डी का सेवन करने से गर्दन के रोग की समस्या दूर होती है।

(यह जानकारी विविध स्रोतों से प्राप्त है कृपया चिकित्सक से सलाह अवश्य लें।)

अनुभव अमृतम्

कैलाश कई बार लगता है व्यर्थ चिन्तन हुआ। जब सातवीं क्लास में पढ़ता था, मैं पूछता था, व्यर्थ चिंतन क्यों होता है? बिना वजह से चिन्तन। अब विपश्यना की कृपा हो गई। बहुत शान्ति है, बहुत सुख है, और सुख और शान्ति में ही सिंहावलोकन करते हैं। ट्रांसफर हो के सिरोही आये भवरसिंहजी राव, डबल्यू.एल.आई. वॉयरलेस लाइसेंस इन्सपेक्टर। उस समय रेड़ियो का लाईसेंस मिला करता था 15 रुपये में। घर का डोमेस्टिक लाईसेंस यदि घर पर रेड़ियो रखते हैं उसका लाईसेंस लेना पड़ेगा। कॉमर्शियल में 30 रुपया वार्षिक। यदि कोई बिना लाईसेंस के रेड़ियो भी बजाता तो उसका चालान कट जाता, जुर्माना भरना पड़ता। और डबल्यू.एल.आई. की पोस्ट हुआ करती थी। सिरोही में पोस्ट, पाली में पोस्ट, भीलवाड़ा में पोस्ट। उनका क्या कर्त्तव्य होता था कि, कोई बिना लाईसेंस के रेडियो नहीं बजावे। कई बार किसी गाँव में इनकम टेक्स के छापे पड़ते हैं, वैसे ही छापे डालते। घर–घर जाकर तलाशियाँ लेते। कोई रेड़ियो बजा तो नहीं रहा है। वो ही डबल्यू.एल.आई. भवरसिंहजी राव का एक दिन फोन आया कि– कैलाश जी, कैलाश जी मैं बहुत घायल हो गया हूँ मेरा घुटना टूट गया है। चालीस व्यक्ति घायल हो गये हैं, पिण्डवाड़ा के पास पड़े हैं– हम। सात व्यक्ति मर गये हैं। जल्दी आओ, दौड़ो, दौड़ो बचाओ। आप आ जाओ, आता हूँ अभी। पोस्टमास्टर साहब को कहा। साहब ने कहा– जाओ जाओ। दौड़ा–दौड़ा बस स्टेण्ड आया, पैदल–पैदल उस समय साईकिल भी नहीं थी। बस स्टेण्ड आते ही मुझे पिण्डवाड़ा की बस कहाँ मिलेगी? साहब, अभी निकली है दस मिनट पहले अब डेढ़ा घण्टे बाद आओ। डेढ़ घण्टा? डेढ़ घण्टा तो बहुत भारी होता है। भवरसिंहजी राव ने कहा, चालीस आदमी घायल हो गये हैं। सब तड़प रहे हैं, दवाइयाँ नहीं है, पट्टियाँ नहीं है जितनी बांधनी थी बांध दी।

सेवा ईश्वरीय उपहार– 192 (कैलाश 'मानव')

दिव्यांग, अनाथ, असहाय एवं वंचितजन की सेवा में सतत सक्रिय संस्थान के विभिन्न सेवा प्रकल्पों में करें सहयोग

कृपया अपने परिजनों या स्वयं के जन्मदिन, शादी की वर्षगांठ पुण्यतिथि को बनायें यादगार..

जन्मजात पोलियो ग्रस्त दिव्यांगों के ऑपरेशनार्थ सहयोग राशि

ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि	ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि
501 ऑपरेशन के लिए	17,00,000	40 ऑपरेशन के लिए	1,51,000
401 ऑपरेशन के लिए	14,01,000	13 ऑपरेशन के लिए	52,500
301 ऑपरेशन के लिए	10,51,000	5 ऑपरेशन के लिए	21,000
201 ऑपरेशन के लिए	07,11,000	3 ऑपरेशन के लिए	13,000
101 ऑपरेशन के लिए	03,61,000	1 ऑपरेशन के लिए	5000

निर्धन एवं दिव्यांगों को खिलाएं निवाला

आजीवन भोजन/नाश्ता सहयोग मिति

(वर्ष में एक दिवस 50 दिव्यांग, निर्धन एवं अनाथ बच्चों के लिए भोजन/नाश्ता सहयोग हेतु मदद करें)

नाश्ता एवं दोनों समय भोजन सहयोग राशि	37000/-
दोनों समय के भोजन की सहयोग राशि	30000/-
एक समय के भोजन की सहयोग राशि	15000/-
नाश्ता सहयोग राशि	7000/-

दुर्घटनाग्रस्त एवं जन्मजात दिव्यांगों को दें कृत्रिम हाथ-पैर और सहायक उपकरणों का उपहार

वस्तु	सहयोग राशि (एक नग)	सहयोग राशि (तीन नग)	सहयोग राशि (पाँच नग)	सहयोग राशि (ग्यारह नग)
तिपहिया साईकिल	5000	15,000	25,000	55,000
व्हील चेयर	4000	12,000	20,000	44,000
केलीपर	2000	6,000	10,000	22,000
वैशाखी	500	1,500	2,500	5,500
कृत्रिम हाथ/पैर	5100	15,300	25,500	56,100

गरीब दिव्यांगों को बनाएं आत्मनिर्भर

मोबाइल /कम्प्यूटर/सिलाई/मेहन्दी प्रशिक्षण सौजन्य राशि

1 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 7,500	3 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -22,500
5 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 37,500	10 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -75,000
20 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 1,50,000	30 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -2,25,000

अधिक जानकारी के लिए कॉल करें

मो नं. : +91-294-6622222 वाट्सअप : +91-7023509999

आपके अपने संस्थान का पता

नारायण सेवा संस्थान - 'सेवाधाम', सेवानगर, हिरण मगरी, सेक्टर-4, उदयपुर-313002 (राजस्थान) भारत

अपने बैंक खाते से संस्थान के बैंक खाते में जमा करें - अपना दान

आप अपना दान सहयोग नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर के नाम से संस्थान के बैंक खातों में सीधे भी जमा करवाकर PAY IN SLIP भेजकर सूचित कर सकते हैं, जिससे दान प्राप्ति रसीद आपको भेजी जा सके।

संस्थान पेन कार्ड नम्बर AAATN4183F, टेन नम्बर JDHN01027F

Bank Name	Branch Address	RTGS/NEFT Code	Account
State Bank of India	H.M.Sector-4	SBIN0011406	31505501196
ICICI Bank	Madhuban	ICIC0000045	004501000829
Punjab National Bank	KalajiGoraji	PUNB0297300	2973000100029801
Union Bank of India	Udaipur Main	UBIN0531014	310102050000148

संस्थान को दिया गया दान-सहयोग आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80G के अन्तर्गत 50 प्रतिशत नियमानुसार छूट के योग्य है।

मन के जीते जीत सदा (दैनिक समाचार-पत्र) प्रकाशक : कैलाश चन्द्र अग्रवाल 483, सेवाधाम, सेवानगर, हिरण मगरी, से. 4, उदयपुर (राज.) स्वामित्व : नारायण सेवा संस्थान प्रकाशन स्थल : ई, डी-71 बप्पा रावल नगर, हि.म. सेक्टर-6, उदयपुर
मुद्रक : न्यूटेक ऑफसेट प्रिंटर्स, 13, भोपा मगरी, बी.एस.एन.एल. एक्सचेंज के पास, हिरण मगरी, सेक्टर - 3 उदयपुर (राज.) के लिए नारायण प्रिंटिंग प्रेस, सेवा महातीर्थ, लियो का गुडा, उदयपुर
सम्पादक : लक्ष्मीलाल गाडरी, मो. 8278607811, 9119398965 • ई-मेल : mankijeet2015@gmail.com • आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353, • डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023